यूं ही 'सोनार बंगला' नहीं है पश्चिम बंगाल

जो बंगाल आज सोचता, देश उसे कल सोचता है- गोखले

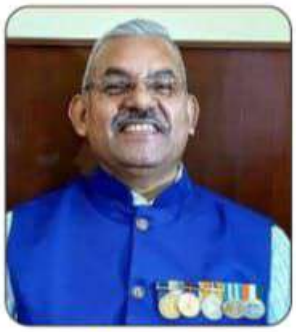

गंगेश्वर सिंह
पूर्व डीजीपी, पश्चिम बंगाल
सम्प्रति- सदस्य, कर्मचारी चयन आयोग, पश्चिम बंगाल

पश्चिम बंगाल अपने देश भारतवर्ष का एकलौता राज्य है जिसके एक ही साथ कई नाम हैं। पश्चिम बंगाल सरकारी नाम है पर राज्य के भीतर और बाहर आम जन इसे बंगाल कहकर पुकारते हैं। मेरे ख्याल से ब्रिटिश भारत के तत्कालीन गवर्नर जनरल लार्ड कर्जन द्वारा 1905 में वृहतर बंगाल के दो हिस्सों (पूर्व बंगाल और पश्चिम बंगाल) में विभाजन के विरोध में सम्पूर्ण बंगाली जनसमुदाय सड़क पर उतर आन्दोलनरत्त था। बंगभंग के विरोध में मानछी ना मानोबो ना के जोरदार नारे की अनुगूंज का आभास हमें आज भी होता है जब इस राज्य को जनसाधारण बंगाल कहता है। इस राज्य के प्रबुद्ध जन मानस के लिए यह आज भी बंग प्रदेश है। हाल में इसका सरकारी नामकरण पश्चिमबंगो का भी प्रस्ताव पारित हो रखा है। पर ले देकर आम जन के लिए यह बंगाल ही है। बंगला भाषा में यह पश्चिम बंगाल है पर अंग्रेजी में इसका नाम वेस्ट बंगाल हो जाता है और वह भी निर्विवाद। आपको उतर प्रदेश या अन्य किसी भी प्रदेश के नाम अंग्रेजी में लिखना हो तो ऐसा नहीं करना होता यानि उत्तर प्रदेश नार्थ प्रदेश नहीं हो जाता। इस प्रदेश की राजधानी कोलकात्ता पूर्वोत्तर भारत का गेटवे कहलाता है और अंग्रेजी हुकूमत का केन्द्र भी रहा। सन 1912 तक यह ब्रिटिश शासित भारत की राजधानी भी। इस प्रदेश की कतिपय भौगोलिक विशेषताएं हैं जो शायद भारत के अन्य प्रदेश में शायद ही मिले। बंगाल की उत्तरी सीमा में हिमालय है तो दक्षिण में समुद्र तट भी।इसके साथ तीन देशों बंगला देश, भूटान और नेपाल की लम्बी अन्तरराष्ट्रीय सीमायें हैं तो भारत के पांच राज्यों ओडिशा, बिहार, झारखंड, सिक्किम और आसाम के साथ इसकी लम्बी अन्तरराज्यीय सीमा भी है।

व्यापार–व्यवसाय, वाणिज्य, पर्यटन, आवागमन के लिहाज से जहां राज्य की भौगोलिक स्थिति आईडियल है और रही है वहीं यह सुरक्षा की दृष्टि

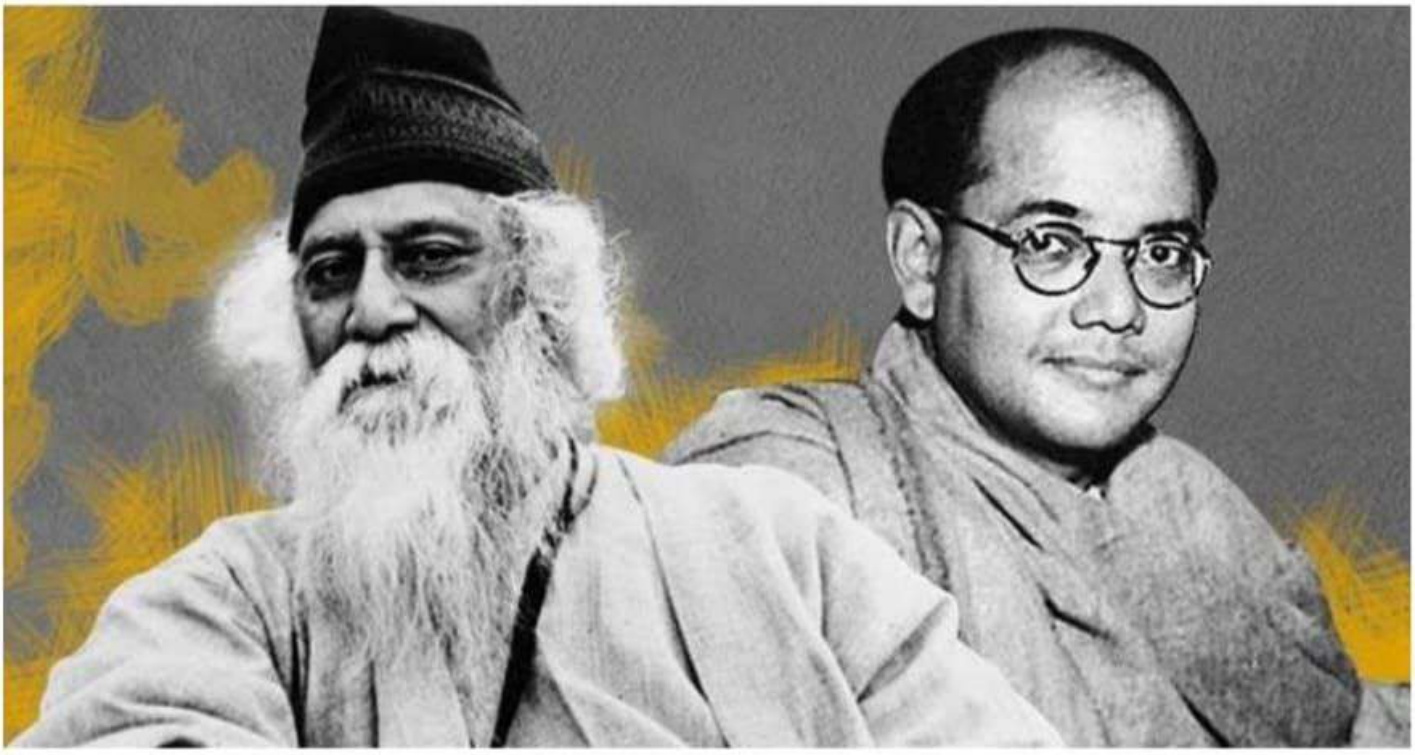

से कम चुनौतीपूर्ण नहीं है। बंगाल की भूमि काफी उर्वर है। धान, जूट, ईख की खेती के साथ प्रदेश के उत्तरी हिस्से में चाय के अनगिनत बागान भी हैं। एक समय यहां उद्योग धंधों की भरमार थी। राज्य के पश्चिमी हिस्से दुर्गापुर, आसनसोल में कोयला खनन के साथ अन्याय उद्योग–धंधे भी खूब विकसित हो रहे हैं। वन क्षेत्र के साथ जैविकीय विविधता की भी प्रचुरता है।

गौरवशाली इतिहास के कारण बना 'सोनार बंगला'

इस प्रदेश का प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक इतिहास काफी गौरवपूर्ण रहा है। कहने में कोई हिचक नहीं कि प्रदेश के कुछ ऐतिहासिक घटनाक्रम न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व को एक नया दिशानिर्देश और गति देकर विश्व चेतना को आन्दोलित करते रहे हैं। शशांक की शूरवीरता, गोपाल पाल के सम्राज्य विस्तार, बल्लाल सेन का पराक्रम, लक्ष्मण सेन का पलायनवाद, गौड़ में पठान, शेरशाह हुमायूं के भिड़ंत, अलीवरदी खां द्वारा मुर्शिदाबाद में मुगल सल्तनत से स्वतंत्र सत्ता की स्थापना, सिराजुद्धौला और अंग्रेजों में 23 जून 1757 में पलासी की निर्णायक लड़ाई और सेनापति मिरजाफर की बेवफाई जैसे ऐतिहासिक घटनाक्रम और चरित्र युगांतकारी साबित हुए। भारत के सत्ताधीश की जीत तब तक पूरी नहीं होती थी जब तक वह बंगाल पर हुकूमत कायम नहीं कर लेता था। सैन्य रणनीति के लिहाज से यह जरूरी था। इसके अलावे बंगाल सदा से धनधान्य से संपन्न रहा है। कहते हैं न– मनी मेक्स मेयर गो। ऐसे ही इसका नाम सोनार बंगला थोड़ी पड़ा है।

स्वतंत्रता का पहला शंखनाद

अपना देश जब अंग्रेजों की दासता की बेड़ियों में जकड़ा था तब इससे मुक्ति के लिए सबसे पहले क्रान्ति का बिगुल यहीं बजा। इस दिशा में एक से बढ़कर एक प्रयोग हुए।खुदी राम बोस जैसे किशोर मां भारती की आजादी के निमित्त हंसते–हंसते फांसी पर चढ़ गये। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जैसे बलिदानी स्वतंत्रता सेनानी की कर्मभूमि भी बंगाल ही रहा है जो अपने आदर्श पालन हेतु राष्ट्र पिता महात्मा गांधी को चुनौती देते हुए फारवर्ड ब्लॉक और फिर आजाद हिन्द फौज का गठन कर डाला। उन्नीसवीं सदी में बंगाल में सच में नवजागरण का दौर आया था। उस दौर में एक से बढ़कर एक महापुरुष बंगाल में जन्मेंय जैसे– आधुनिक भारत के जनक राजा राम मोहन राय, राम कृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, अरविन्द घोष, राष्ट्रगान और राष्ट्रीय संगीत के रचयिता क्रमशः गुरूदेव रवींद्र नाथ टैगोर और बंकिम चन्द्र चौटर्जी आदि। अंग्रेजी शिक्षा का सबसे ज्यादा लाभ बंगाल को मिला। फलतः वैश्विक पटल पर भारत और भारतीयता भी हुंकार भरने लगा।

अपूर्व पुलिस व्यवस्था

आधुनिक प्रशासन और पुलिस व्यवस्था की शुरुआत भी बंगाल प्रेसीडेंसी से हुई जो आज चलायमान है और पूरे देश को एक दिशा दिखा रहा है। पश्चिम बंगाल एक मात्र राज्य है जहां दो पुलिस हैंय पश्चिम बंगाल पुलिस और कलकत्ता पुलिस। अंग्रेजों की यह लिगेसी बदस्तूर जारी है। कमिशनरेट पुलिस की जन्म स्थली भी यह प्रदेश ही रहा है।आज तो इसकी उपादेयता को देखते हुए पूरा देश अनुकरण कर रहा है। गोखले का यह कथन– बंगाल जो आज सोचता है उसे भारत कल सोचता हैय आज भी सार्थक लगता है।

शक्तिशाली मध्यमवर्ग

पश्चिम बंगाल की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, बौद्धिक, धार्मिक और राजनीतिक जीवन थोड़ा भारत से हटकर है। यहां के समाज में जाति ज्यादा मुखर नहीं है। जाति के बदले क्लास मुखर है। बंग समाज में मध्यम वर्ग काफी शक्तिशाली है जिसका देश के अन्य राज्यों में अभाव है। यहां का समाज प्रोग्रेसिव है,वैज्ञानिक सोच रखता है, मननशील है, रचनाधर्मी है और लीक से हटकर सोचता है। अपनी भाषा, परंपरा, संस्कृति, रहन–सहन, खानपान और वेषभूषा के प्रति सजग, सतर्क और रक्षणशील है। यही कारण है कि बंगाली समुदाय में सब–नेशनलिज्म झलकता है। जब बंगाली समाज की बात आती है तब उनकी अन्य पहचान और धार्मिक विश्वास गौण हो जाता है। देखते नहीं तत्कालीन पूर्व पाकिस्तान (आधुनिक बंग्लादेश) में जब बंगला भाषा के बदले वहां के लोगों पर उर्दू थोपा जा रहा था तब वहां के बांग्लाभाषी मुसलमानों ने इसका पुरजोर विरोध किया और यह कहते– मोदेर गर्व मोदेर आशा आमरी बांग्लाभाषीय शहादत दे दी।

राजनीतिक स्थायित्व

यहां का राजनीतिक परिदृश्य भी अलग है जिसमें स्थायित्व दिखता है। परिवर्तन यहां का नियम नहीं अपवाद हैय यह समय सापेक्ष है। यहां का जन–मानस किसी भी राजनैतिक शक्ति को बड़ी जांच पड़ताल के बाद सत्ता में लाता है और फिर दो तीन दशक तक सत्ता में रखता है और जिसे एक बार सत्ताच्युत कर देता है फिर उसे और मौका नहीं देता। फिर एक नयी राजनीतिक ईकाई के साथ नया प्रयोग शुरु होता है।

यहां के पर्व–त्योहार में जीवंतता होती है जो आपके जीवन को रस से सराबोर कर देंगे। उत्सव मनाने के रंग ढंग भी अलग–विलग है। जीवन के हरेक क्षेत्र को बारीकी से देखने और जीवन में बहुआयामी जीवन की तलाश ही बंगाली समाज को प्रकृति के पास लिए जाता है जिसका सान्निध्य लाभ पाकर इनकी रचनाधर्मिता हर पल निखरती ही रहती है।